वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 241

पावापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा

संकलनकर्त्री

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ स्वर्णिम वर्षायोग के अन्तर्गत पावापुरी में दीपावली पर्व एवं 2530वें वीर निर्वाण संवत् के अवसर पर प्रकाशित

जम्बूद्वीप • हस्तिनापुर

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280236

प्रथम संस्करण	25 अक्टूबर 2003	मूल्य
2200 प्रति	दीपावली पर्व	15.00

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन :-

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

-: सम्पादक :-

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

साहित्य समाज का दर्पण होता है उसी के द्वारा देश, समाज एवं प्राचीन तीर्थों के वैभव का परिज्ञान होता है। पूर्व में मनुष्यों की बुद्धि अतितीक्ष्ण होने से वे एक बार सुनने मात्र से ही उसे ग्रहण कर लेते थे तब साहित्य लेखन की परम्परा नहीं थी किन्तु जब हमारे पूर्वाचार्यों ने मानवों की स्मृति को क्षीण होते देखा तब केवलज्ञानियों की वाणी को शास्त्रों में संजोना-लिखना प्रारंभ कर दिया।

लेखन परम्परा में सर्वप्रथम आचार्य श्री गुणधरस्वामी ने कषायप्राभृत ग्रंथ एवं पुष्पदंत-भूतबली आचार्यों ने षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ रचा उसके पश्चात् तो अनेक आचार्यों ने अनेक बहुमूल्य ग्रंथ लिखे जो कि मंदिरों एवं शास्त्र-भण्डारों में आज भी उपलब्ध हैं जिनके बल पर ही जैनधर्म का अस्तित्व टिका है।

वर्तमान में बीसवीं शताब्दी में परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य सृजन के इतिहास में अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है और धर्म से उन्मुख लोगों को धर्म की ओर मोड़ने का तथा आगम का ज्ञान करवाने का जो सद्प्रयास किया है उस हेतु जैन समाज उनका चिरऋणी रहेगा। आज वर्तमान का समसामयिक विषय हमारे तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमि एवं कल्याणकभूमियों पर लगे प्रश्नचिन्ह का है उस श्रृंखला में भी जैन समाज को सही दिशा दिखाने हेतु पूज्य माताजी सतत प्रयासरत हैं और इस क्रम में उन्होंने अपनी सुयोग्य शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी को प्रेरणा प्रदान कर तीर्थंकर भगवन्तों की कल्याणक भूमियों को पूजा के माध्यम से बताने का प्रयास किया है। प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी भी काव्य लेखन जगत में एक उदीयमान सूर्य हैं। जो पूज्य माताजी के पदचिन्हों पर चलकर अपनी जीवन्त लेखनी से जनमानस में धर्मरूपी गंगा का प्रवाह कर रही हैं उसी धर्मगंगा का एक रूप यह ''पावापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा'' है। आप सब इस पुस्तक के माध्यम से भगवान महावीर की निर्वाणभूमि का विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर महान पुण्य का संचय करें यही मंगल कामना है।

प्रस्तावना

-कु. इन्दू जैन (संघस्थ)

युग की आदि में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने शाश्वत तीर्थ अयोध्या में जन्म लिया और कैलाशपर्वत से मोक्ष प्राप्त किया, उसी तीर्थंकर परम्परा में अन्य तेईस तीर्थंकर भगवान हुए, जिनमें भगवान महावीर चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर हैं जिन्होंने बिहार प्रांत के कुण्डलपुर नगर में आज से २६०२ वर्ष पूर्व जन्म लिया और पावापुरी सिद्धक्षेत्र से निर्वाणधाम को प्राप्त किया। वर्तमान में हम सभी उन्हीं के शासनकाल में रहकर जिनधर्म की शरण लेकर अपनी आत्मा का उत्थान कर रहे हैं लेकिन यह कालदोष ही है कि जिन वीर प्रभु के शासनकाल में हम रह रहे हैं उन्हीं की पंचकल्याणक भूमियों को कतिपय आधुनिक शोधकर्ताओं द्वारा विवाद का विषय बना दिया गया है और जन्मभूमि को वैशाली तथा निर्वाणभूमि उत्तरप्रदेश में पावा को सिद्ध करने का दुष्प्रयास चल रहा है।

वर्तमान में यह अत्यन्त शोचनीय विषय है कि हम किस प्रकार उन तीर्थंकर भगवान की पंचकल्याणक भूमियों के बारे में आगमोक्त जानकारी जनमानस को प्रदान कर मिथ्या भ्रांतियों का निराकरण कर सकें। जैन समाज का यह पुण्योदय ही है कि वर्तमान में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की लेखनी से निःसृत अनेकों ग्रंथों के माध्यम से लोगों ने प्रचुर मात्रा में इस बात को समझा है लेकिन तीर्थों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी श्रद्धालुजनों को प्राप्त हो इस हेतु पूज्य माताजी ने अपनी वर्षों से छिपी भावना को मूर्त रूप प्रदान करने हेतु अपनी शिष्या प्रश्राश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी को प्रेरणा प्रदान की और उन्होंने पूज्य माताजी की भावनानुसार ''पावापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा'' की सुन्दर रचना की तथा अनेक पूजा आदि का संकलन किया। इस पुस्तक में पाठकों को पूजन के साथ-साथ पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित भगवान महावीर पूजा, गौतम गणधर पूजा, निर्वाणकाण्ड व तीर्थ परिचय भी प्राप्त होगा।

इस पुस्तक के द्वारा सभी पाठकगण एवं श्रोतागण भगवान महावीर की निर्वाणभूमि के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर भगवान महावीर सम बनने का पुरुषार्थ करें यही इस पुस्तक की सार्थकता है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का परिचय

-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

जिस हस्तिनापुर में इस संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कलाप चल रहे हैं, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पारणा, कौरव-पाण्डव की राजधानी, दर्शन प्रतिज्ञा में प्रसिद्ध मनोवती का इतिहास आदि पौराणिक कथानकों से जुड़ी वह हस्तिनापुर नगरी एक ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरी है। सन् १९७२ में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के नाम से दिल्ली में इस संस्था का जन्म हुआ।

सन् १९७५ से हस्तिनापुर में निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया और अब तक वहाँ अनेक भव्य रचनाएं, कमरे, फ्लैट, कोठियां आदि बन चुके हैं, निर्माण के अतिरिक्त संस्थान के द्वारा शिक्षा एवं धर्म प्रचार-प्रसार हेतु शिक्षण शिविर, सेमिनार, अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन आदि के आयोजन होते रहते हैं। पूज्य माताजी द्वारा लिखित चारों अनुयोगों एवं धर्मप्रभावना के समाचारों से सहित सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन सन् १९७४ से बराबर निर्बाध गति से चल रहा है। संस्थान के अंतर्गत ही सन् १९७४ में स्थापित वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से २५० से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। यहां जम्बूद्वीप पुस्तकालय, णमोकार महामंत्र बैंक, गणिनी ज्ञानमती प्राकृत शोधपीठ आदि के द्वारा धार्मिक शैक्षणिक एवं पारमार्थिक कार्यक्रम चलते रहते हैं। सन् १९७५ से प्रारंभ पंचकल्याणकों में अब तक अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं प्रति ५ वर्षों में होने वाले जम्बूद्वीप महामहोत्सव में से ४ महोत्सव हो चुके हैं। इस संस्थान द्वारा जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् १९८२ में दिल्ली से स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उद्घाटित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का १०४५ दिनों तक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण एवं हस्तिनापुर में उसकी अखण्ड स्थापना हुई, सन् १९९८ में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार द्वारा अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार हुआ। वहीं वर्तमान में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से प्रवर्तित

''**भगवान महावीर ज्योति**'' रथ के भारत भ्रमण से जनमानस भगवान महावीर के विषय में आगमसम्मत ज्ञान प्राप्त कर रहा है। जम्बूद्वीप स्थल पर समय-समय पर भव्य दीक्षाएं भी सम्पन्न हुई हैं। इसी संस्थान द्वारा दिल्ली के लालकिला मैदान में ४ फरवरी सन् २००० को प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी द्वारा उद्घाटित ''भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव'' सम्पूर्ण देश एवं विदेशों में मनाया गया। जिसके अंतर्गत अनेक संगोष्ठियाँ, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ निर्माण आदि कार्यक्रम हुए। सन् २०००-२००१ में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से प्रयाग, इलाहाबाद में ''**तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली**'' तीर्थ का नवनिर्माण हुआ है तथा ६ अप्रैल सन् २००१ को ही प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाए जाने वाले भगवान महावीर २६००वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष में पूज्य माताजी द्वारा रचित ''विश्वशांति महावीर विधान'' का विराट आयोजन प्रथम राष्ट्रीय आयोजन के रूप में राजधानी दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में अक्टूबर २००१ में सम्पन्न हुआ। उसी जन्मकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत वर्तमान में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास कार्य द्रुतगति से चल रहा है।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का वीर नि. सं. २५२९, ईसवी सन् २००३ का यह चातुर्मास ''कुण्डलपुर'' में हो रहा है। माताजी ने चातुर्मास में ८-८ कोश तक चारों दिशाओं की सीमा रखी है उसी के अंतर्गत पावापुरी और राजगृही आ जाने से माताजी ने राजगृही में ''वीरशासन जयंती पर्व समारोह'' में सानिध्य प्रदान किया है एवं दीपावली के समय पावापुरी में सानिध्य प्रदान करेंगी, यह प्रसन्नता का विषय है।

इस प्रकार आप सबके सहयोग से संचालित हो रहा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान अपनी चतुर्मुखी योजनाओं से समाज को सदैव लाभान्वित करता रहे यही मंगल कामना है।

तीर्थंकर जन्मभूमि विकास की प्रेरणास्रोत-जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी

राष्ट्रगौरव गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का

-:संक्षिप्त-परिचयः-

प्रस्तुति-आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान —टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्मतिथि —आसोज सुदी १५ (शरदपूर्णिमा) वि. सं. १९९१(सन् १९३४)
गृहस्थ का नाम —कु. मैना
माता-पिता —श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन
आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत एवं गृहत्याग— ई. सन् १९५२ में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से।
क्षुल्लिका दीक्षा —चैत्र कृ. १, ई. सन् १९५३ को महावीरजी क्षेत्र (राज.) में
आर्यिका दीक्षा —वैशाख कृ. २, ई. सन् १९५६ को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती १०८ आचार्यश्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी के करकमलों से।

कृतित्व — ♦ अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्रव्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं २५० विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका।

♦ हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तीनमूर्ति मंदिर, कमल मंदिर, ध्यान मंदिर, ॐमंदिर आदि के निर्माण की प्रेरिका।
♦ समवसरण श्रीविहार रथ का सम्पूर्ण भारत में २२ मार्च १९९८ से प्रवर्तन।
♦ १९८१, १९८२, १९८५, १९८७, १९९२,१९९३, १९९५, १९९८ में जैनधर्म संबंधी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों की प्रेरिका।
♦ १९९५ में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।
♦ ४ फरवरी २००० को भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महा महोत्सव की सम्प्रेरिका।
♦ "तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली" प्रयाग तीर्थ के निर्माण एवं नूतन तीर्थ पर ४ से ८ फरवरी २००१ तक भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं महामस्तकाभिषेक की प्रेरणास्रोत।
♦ ई.सन् २००१ में भगवान महावीर २६००वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव के अवसर पर २६००मंत्रों से समन्वित "विश्वशांति महावीर विधान" का लेखन एवं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) तीर्थ विकास की प्रेरणा।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पुस्तक की रचयित्री

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का

-:संक्षिप्त परिचयः-

प्रस्तुति-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

जन्म — १८ मई सन् १९५८, ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या
जन्मस्थान — टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.
जन्म नाम — कु. माधुरी जैन
माता-पिता — श्रीमती मोहिनी जैन एवं श्री छोटेलाल जैन
लौकिक शिक्षा — हाईस्कूल
धार्मिक अध्ययन — शास्त्री, विद्यावाचस्पति आदि
आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत— सन् १९७१, अजमेर (राज.) में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी से
दो प्रतिमा के व्रत — सन् १९८२, दिल्ली में
सप्तम प्रतिमा — मार्च सन् १९८७ हस्तिनापुर में
आर्यिका दीक्षा — १३ अगस्त, सन् १९८९ रविवार, श्रावण शुक्ला ग्यारस को हस्तिनापुर में पूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी के करकमलों से
कार्यकलाप — १८ वर्ष तक पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री रत्नमती माताजी की छत्रछाया में गुरु वैयावृत्ति एवं स्वाध्याय, चिन्तन, मनन, तपश्चरण एवं धर्मप्रवचन, अध्ययन आदि के साथ ही साथ सतत् साहित्य लेखन ।

वर्तमान में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा लिखित षट्खंडागम ग्रंथ की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद तथा अनेक ग्राम, नगर एवं तीर्थक्षेत्रों पर विहार करते हुए अपने हित-मित वचनामृत से जनकल्याण में निरत और साधना की उच्चतर सीढ़ियों पर सतत आरोहण।

अहिंसा के अवतार थे भगवान महावीर

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

आज से लगभग २६०२ वर्ष पूर्व बिहार प्रान्त के "कुण्डलपुर" नगर में राजा सिद्धार्थ की धर्मपत्नी महारानी त्रिशला के गर्भ से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को एक पुत्ररत्न का जन्म हुआ, जिनका नाम रखा गया-वर्धमान। स्वर्ग से सौधर्म आदि इन्द्रों ने आकर उनका खूब उत्साहपूर्वक जन्मोत्सव मनाया और सुमेरू पर्वत की पांडुब शिला पर ले जाकर १००८ कलशों से उनका जन्माभिषेक किया।

जैन धर्म में प्रसिद्ध चौबीस तीर्थंकरों में महावीर स्वामी अंतिम तीर्थंकर थे। इससे पूर्व कर्मयुग के प्रारंभ में जब प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने "अयोध्या" में जन्म लिया था। तब महावीर उनके पोते मरीचि की पर्याय में थे। उसी समय उन्हें ऋषभदेव के मुखारविन्द से ज्ञात हो गया था कि तू भविष्य में चौबीसवां तीर्थंकर बनेगा, तब मरीचि ने अहंकारवश अनेक कुरीतियाँ चलाकर भव-भवान्तरों में नरक-पशु आदि गतियों के दु:ख भोगे पुन:एक बार सिंह की पर्याय में महामुनियों से सम्बोधन प्राप्त कर जीवन का उत्थान प्रारंभ किया। उसके पश्चात् दशवें भव में तीर्थंकर महावीर बनकर वे अहिंसा के अवतार कहलाए। इस प्रकार ऐतिहासिक दृष्टि से भगवान ऋषभदेव और महावीर में बाबा-पोते का संबंध है। इनमें से किसी ने भी जैनधर्म की स्थापना नहीं की है, प्रत्युत् उस धर्म का प्रचार-प्रसार कर स्वयं के जीवन में "जिन" शब्द को सार्थक किया है इसीलिए वे जिनेन्द्र भगवान कहलाये और उनके उपासक "जैन" माने गये। जैनधर्म एक सर्वहितकारी धर्म है जो प्राणिमात्र को दु:खों से निकालकर सुख का मार्ग बताता है, वह जाति और सम्प्रदाय से बिल्कुल भिन्न विश्वधर्म के रूप में प्राकृतिक और अनादि धर्म है।

भगवान महावीर ने तीस वर्ष की युवावस्था में पूर्वभव के जातिस्मरण हो जाने से जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर ली और उनका प्रथम आहार "कूलग्राम" में राजा कूल के यहाँ हुआ। उन्हें दीक्षा के १२ वर्ष पश्चात् केवलज्ञान उत्पन्न हो गया, उसके बीच

में किसी एक दिन वे "कौशाम्बी" नगरी में आहार के लिए पहुँचे। वहाँ राजा "चेटक" की सबसे छोटी पुत्री "चन्दना" एक सेठानी के द्वारा सताई हुई सांकलों में बंधी थी और कोदों का तुच्छ भोजन ग्रहण करती थी किन्तु महावीर को देखते ही उसने भक्तिपूर्वक उनका पड़गाहन किया जिसके प्रभाव से चंदना के सारे बंधन टूट गये, वह वस्त्राभूषणों से सुन्दर हो गई और कोदों का चावल "शालि" धान्य में परिवर्तित हो गया पुन: चन्दना ने श्रद्धा सहित महावीर स्वामी को आहारदान दिया और देवताओं ने उस समय रत्नवृष्टि कर दान का महत्व प्रदर्शित किया।

केवलज्ञान होने के पश्चात् ३० वर्षों तक उन्होंने सारे देश में भ्रमण कर जनता को दिव्य उपदेश दिया पुन: ७२ वर्ष की उम्र में बिहार की "पावापुरी" नगरी में कार्तिक कृष्णा अमावस के दिन समस्त कर्मों का नाश कर निर्वाण प्राप्त कर लिया। जैन पुराणों के अनुसार तब से ही "दीपावली पर्व" मनाया जाने लगा है। उनके निर्वाण को आज २५२९ वर्ष हो चुके हैं और वर्तमान में २५३० वाँ वीर निर्वाण संवत् चल रहा है।

इस प्रकार भगवान महावीर की भक्ति करते हुए आप सभी अपने जीवन को सार्थक करने का पुरुषार्थ करें यही मंगल भावना है।

भगवान महावीर निर्वाणभूमि-पावापुरी जल मंदिर

प्रस्तुति-गणिनी ज्ञानमती

पावापुरी में सरोवर के मध्य स्थित जल मंदिर ही भगवान महावीर की निर्वाणभूमि है।

श्री पूज्यपाद आचार्य ने निर्वाणभक्ति में कहा है—

पद्मवनदीर्घिकाकुल-विविधद्रुमखण्डमण्डिते रम्ये।
पावानगरोद्याने व्युत्सर्गेण स्थितः स मुनिः।।१६।।
कार्तिककृष्णस्यान्ते स्वातावृक्षे निहत्य कर्मरजः।
अवशेषं संप्रापद्-व्यजरामरमक्षयं सौख्यम् ।।१७।।
परिनिर्वृतं जिनेन्द्रं, ज्ञात्वा विबुधा ह्यथाशु चागम्य।
देवतरुरक्तचंदन - कालागुरुसुरभिगोशीर्षैः ।।१८।।
अग्नीन्द्राज्जिनदेहं मुकुटानलसुरभिधूपवरमाल्यैः।
अभ्यर्च्य गणधरानपि, गता दिवं खं च वनभवने।।१९।।

पुनश्च— पावापुरस्य बहिरुन्नतभूमिदेशे, पद्मोत्पलाकुलवतां सरसां हि मध्ये।
श्रीवर्द्धमानजिनदेव इति प्रतीतो, निर्वाणमाप भगवान् प्रविधूतपाप्मा।।२४।।

श्रीगुणभद्र आचार्य ने उत्तरपुराण में कहा है—

क्रमात्पावापुरं प्राप्य मनोहरवनान्तरे।
बहूनां सरसां मध्ये महामणिशिलातले।।५०९।।
स्थित्वा दिनद्वयं वीतविहारो वृद्धनिर्जरः।
कृष्णकार्तिकपक्षस्य चतुर्दश्यां निशात्यये।।५१०।।
स्वातियोगे तृतीयेद्ध-शुक्लध्यानपरायणः।
कृतत्रियोगसंरोधः समुच्छिन्नक्रियं श्रितः।।५११।।
हताघातिचतुष्कः सन्नशरीरो गुणात्मकः।
गन्ता मुनिसहस्रेण निर्वाणं सर्ववाञ्छितम् ।।५१२।।
तदेव पुरुषार्थस्य पर्यन्तोऽनन्तसौख्यकृत् ।
अथ सर्वेऽपि देवेन्द्रा वह्नीन्द्रमुकुटस्फुरत् ।।५१३।।
हुताशनशिखान्यस्त-तद्देहा मोहविद्विषम् ।
अभ्यर्च्य गन्धमाल्यादि-द्रव्यैर्दिव्यैर्यथाविधि।।५१४।।

वन्दिष्यन्ते भवातीतमर्थ्यैर्वन्दारवः स्तवैः।
वीरनिर्वृतिसम्प्राप्तदिन एवास्तघातिकः।।५१५।।
भविष्याम्यहमप्युद्यत्केवलज्ञानलोचनः।
भव्यानां धर्मदेशेन विहृत्य विषयांस्ततः।।५१६।।
(उत्तरपुराण, पर्व ७६)

यहां अभिप्राय यह है कि पावापुरी के मनोहर नाम के उद्यान में कमलों से व्याप्त सरोवर के मध्य महामणिमयी शिला पर भगवान विराजमान हुए उस समय समवसरण विघटित हो चुका था। श्रीविहार बंद कर दो दिन तक ध्यान में लीन हुए महावीर स्वामी ने कार्तिक कृष्णा चतुर्दशी की रात्रि के अंत में अघातिया कर्मों को नष्ट कर निर्वाणपद प्राप्त कर लिया। तभी सौधर्मेन्द्र आदि इन्द्रों ने अग्निकुमार इन्द्र के मुकुट के अग्रभाग से निर्गत अग्नि पर प्रभु का शरीर स्थापित कर दिव्य चन्दन आदि के द्वारा पूजा करके संस्कार कर दिया। उसी दिन गौतमस्वामी को वहीं पर केवलज्ञान प्रगट हुआ है।

हरिवंशपुराण में भी यही लिखा है एवं दीपावली पर्व तभी प्रारंभ हुआ, ऐसा कहा है—

जिनेंद्रवीरोऽपि विबोध्य संततं, समन्ततो भव्यसमूहसन्ततिम्।
प्रपद्य पावानगरीं गरीयसीं, मनोहरोद्यानवने तदीयके।।१५।।
चतुर्थकालेऽर्धचतुर्थमासकै - र्विहीनताविश्चतुरब्दशेषके।
स कार्तिके स्वातिषु कृष्णभूतसु-प्रभातसन्ध्यासमये स्वभावतः।।१६।।
अघातिकर्माणि निरुद्धयोगको, विधूय घातीन्धनवद् विबंधनः।
विबन्धनस्थानमवाप शंकरो, निरन्तरायोरुसुखानुबन्धनम् ।।१७।।
स पञ्चकल्याणमहामहेश्वरः, प्रसिद्धनिर्वाणमहे चतुर्विधैः।
शरीरपूजाविधिना विधानतः, सुरैः समभ्यर्च्यत सिद्धशासनः।।१८।।
ज्वलत्प्रदीपालिकया प्रवृद्धया, सुरासुरैर्दीपितया प्रदीप्तया।
तदा स्म पावानगरी समन्ततः, प्रदीपिताकाशतला प्रकाशते।।१९।।
तथैव च श्रेणिकपूर्वभूभुजः, प्रकृत्य कल्याणमहं सहप्रजाः।
प्रजग्मुरिन्द्राश्च सुरैर्यथायथं, प्रयाचमाना जिनबोधिमर्थिनः।।२०।।

ततस्तु लोकः प्रतिवर्षमादरात्, प्रसिद्धदीपालिकयात्र भारते।
समुद्यतः पूजयितुं जिनेश्वरं, जिनेंद्रनिर्वाणविभूतिभक्तिभाक्।।२१।।

(हरिवंशपुराण सर्ग ६६)

सार यही है कि भगवान महावीर पावापुरी के मनोहर उद्यान में विराजमान हुए। जब चतुर्थकाल में तीन वर्ष साढ़े आठ मास बाकी रहे तब स्वाति नक्षत्र में कार्तिक अमावस्या के दिन प्रातः—उषाकाल के समय स्वभाव से योग निरोधकर शुक्लध्यान के द्वारा सर्वकर्म नष्ट कर निर्वाण को प्राप्त हो गये। उस समय चार निकाय के देवों ने विधिपूर्वक भगवान के शरीर की पूजा की। अनन्तर सुर-असुरों द्वारा जलायी हुई बहुत भारी देदीप्यमान दीपकों की पंक्ति से पावानगरी का आकाश सब ओर से जगमगा उठा। श्रेणिक आदि राजाओं ने भी प्रजा के साथ मिलकर भगवान के निर्वाणकल्याणक की पूजा की पुनः रत्नत्रय की याचना करते हुए सभी इन्द्र, मनुष्य आदि अपने-अपने स्थान चले गये।

उस समय से लेकर भगवान के निर्वाण कल्याणक की भक्ति से युक्त संसार के प्राणी इस भरतक्षेत्र में प्रतिवर्ष आदरपूर्वक प्रसिद्ध दीपमालिका के द्वारा भगवान महावीर की पूजा करने के लिए उद्यत रहने लगे अर्थात् भगवान के निर्वाणकल्याणक की स्मृति में दीपावली पर्व मनाने लगे।

इन्द्र ने प्रभु के चरण उत्कीर्ण किए—

एक प्रकरण हरिवंशपुराण में आया है कि—

जब भगवान नेमिनाथ गिरनार पर्वत से निर्वाण प्राप्त कर चुके तब इन्द्रों ने भगवान की निर्वाणकल्याणक पूजा के बाद गिरनार पर्वत पर वज्र से चरण उत्कीर्ण कर इस लोक में पवित्र सिद्धशिला का निर्माण किया तथा उसे जिनेन्द्र भगवान के लक्षणों के समूह से युक्त किया। यथा—

ऊर्जयन्तगिरौ वज्री वज्रेणालिख्य पावनीम् ।
लोके सिद्धशिलां चक्रे जिनलक्षण पङ्क्तिभिः।।१४।।

(हरिवंश पुराण सर्ग ६५)

श्री समन्तभद्रस्वामी ने भी स्वयंभूस्तोत्र में लिखा है—

ककुदं भुवः खचरयोषिदुषितशिखरैरलंकृतः।
मेघपटलपरिवीत तटस्तव लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा।।१२७।।
वहतीति तीर्थमृषिभिश्च, सततमभिगम्यतेऽद्य च।
प्रीतिविततहृदयैः परितो, भृशमूर्जयन्त इति विश्रुतोऽचलः।।१२८।।

बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्रीशांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज कहते थे कि—इसी प्रकार से पावापुरी सरोवर के मध्य मणिमयी शिला से भगवान के मोक्ष जाने के बाद इन्द्रों ने वज्र से यहाँ पर भी चरणचिन्ह उत्कीर्ण करके इस शिला को सिद्धशिला के समान पूज्य पवित्र बनाया था।

एक बात यह भी ध्यान देने योग्य है कि भगवान केवलज्ञान होने के बाद पाँच हजार धनुष—बीस हजार हाथ प्रमाण ऊपर आकाश में अधर पहुंच जाते हैं। अधर में ही कुबेर द्वारा समवसरण की रचना की जाती है। जब भगवान श्रीविहार करते हैं तब समवसरण विघटित हो जाता है और भगवान आकाश में अधर चलते हैं तथा देवगण प्रभु के चरणों के नीचे स्वर्णमयी दिव्य कमलों की रचना करते रहते हैं। निर्वाणप्राप्ति के पूर्व भी जब भगवान योग निरोध करते हैं तब वे आकाश में अधर ही रहते हैं फिर भी उनके ठीक नीचे की भूमि भगवान की निर्वाणभूमि मानी जाती है चूँकि सिद्ध भगवान सिद्धशिला पर भी ठीक उसी भूमि के ऊपर विराजमान हैं।

इससे यह स्पष्ट है कि भगवान महावीर स्वामी जहाँ से मोक्ष गये हैं ठीक वहीं पर उनके शरीर का संस्कार किया गया है और वहीं पर सरोवर के मध्य मणिमयी शिला पर इन्द्रों ने चरण उत्कीर्ण किये थे। ऐसे ही सम्मेदशिखर पर्वत के सभी टोकों पर इन्द्रों द्वारा चरण उत्कीर्ण किये गये हैं ऐसा मानना चाहिए।

ऐसी सिद्धभूमि पावापुरी को मेरा अनन्त-अनन्त बार नमस्कार होवे।

भजन

रचयित्री-ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

तर्ज–ना कजरे की धार.....

शिवपथ की ओर चलीं, नाजों में हैं जो पलीं, नाजुक सी हैं जो कली,
वही हैं चन्दनामती माता, हैं चन्दनामती माता।
लेखनि है जादू भरी, वाणी है सरस बड़ी, अनुपम अनमोल मणी,
वही हैं चन्दनामती माता, हैं चन्दनामती माता।।
बचपन से ही गुरु के संग, रहकर पाया विद्या धन–२
ये कहतीं, संस्कृति की, सब रक्षा करो भवि प्राणी।
शिवपथ की ओर चलीं, नाजों में हैं जो पलीं, नाजुक सी हैं जो कली,
वही हैं चन्दनामती माता, हैं चन्दनामती माता।।१।।
परवाह नहीं जीवन की, नहिं चाह है धन यौवन की–२
प्रभु भक्ती, से शक्ती, मिलती यह बात बताई।
शिवपथ की ओर चलीं, नाजों में हैं जो पलीं, नाजुक सी हैं जो कली,
वही हैं चन्दनामती माता, हैं चंदनामती माता।।२।।
युग युग तक तेरी कीरत, गाएगा "सारिका" नवयुग।
हर मन में, कण कण में, इक तेरी छवी समाई।
शिवपथ की ओर चलीं, नाजों में हैं जो पलीं, नाजुक सी हैं जो कली,
वही हैं चंदनामती माता, हैं चंदनामती माता।।३।।

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
१.	श्री पावापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा	१७
२.	महावीर जिन पूजा (गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)	२३
३.	गौतम गणधर पूजा (गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)	३०
४.	निर्वाणकांड (भाषा)	३४
५.	निर्वाणकांड (भाषा) (गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)	३६
६.	भगवान महावीर चालीसा	४२
७.	मुझे पावापुर जाना है (भजन)	४५
८.	I will go to Pavapur *(BHAJAN)*	४६
९.	जय वीर प्रभो (आरती)	४७
१०.	ॐ जय महावीर प्रभो (आरती)	४८

भगवान महावीर निर्वाणभूमि

श्री पावापुरी सिद्धक्षेत्र पूजा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

स्थापना (चौबोल छंद)

महावीर प्रभु जिस धरती से, कर्मनाश कर मोक्ष गये।
सिद्धशिला के स्वामी बनकर, सब कर्मों से छूट गये।।
पावापुर निर्वाणभूमि, तीरथ का अर्चन करना है।
आह्वानन स्थापन करने, जलमंदिर में चलना है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छंद)

प्रभुवर ने जन्म जरा मृत्यू का, नाश किया शिवपद पाया।
जलधारा इसीलिए करने को, वीरचरण में मैं आया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।१।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्मतिजिन ने संसारताप को, तप के द्वारा नष्ट किया।
मैंने शीतल चन्दन लेकर, जिनवर के पद में चर्च दिया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।२।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वर तन द्वारा वीर प्रभू ने, अविनश्वर पद को पाया।
मोती सम अक्षत पुंजों को, इसलिए चढ़ाने मैं आया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यौवन में भी प्रभु वर्धमान को, विषयभोग नहिं लुभा सके।
वे पुष्प भी महिमाशाली हैं, जो प्रभुपद में हम चढ़ा सके।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।४।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

उग्रोग्र तपस्या के द्वारा, प्रभु ने क्षुधरोग विनाश किया।
मैंने नैवेद्य थाल द्वारा, प्रभु पूजन में विश्वास किया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।५।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्मति ने शुक्लध्यान द्वारा,निज मोहकर्म का नाश किया।
घृतदीप जला आरति करके, मैंने निज ज्ञान प्रकाश किया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।६।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ध्यान अग्नि में घातिकर्म को, भस्म वीर ने कर डाला।
मैंने उनके सम्मुख अग्नी में, धूप जलाकर सुख माना।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।७।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर घाति अघाती कर्म नाश, प्रभु ने मुक्तीफल प्राप्त किया।
मैंने शिवफल की आशा से, प्रभु को अर्पित फल थाल किया।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।८।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस वसुधा से प्रभु महावीर ने, अष्टम वसुधा प्राप्त किया।
''चन्दनामती'' उस वसुधा को, दे अर्घ्य सहज सुख प्राप्त हुआ।।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर बिच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।।९।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छंद

पावापुरी सरोवर से स्वच्छ जल लिया।
प्रभु वीर के चरण में त्रयधार कर दिया।।
त्रयरत्न प्राप्ति हेतु मैंने प्रभु शरण लिया।
त्रयताप शांति हेतु मैंने यह यतन किया।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

पावापुरी सरोवर कमलों से भरा है।
कुछ पुष्प वही लेके मैंने थाल भरा है।।
पुष्पांजलि कर वीर प्रभु से याचना करूँ।
आतम गुणों की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करूँ।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

दोहा

जलमंदिर में हैं बने, वीर चरण प्राचीन।
उनको अर्घ्य चढ़ाय मैं, करूं प्रदक्षिण तीन।।१।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरस्य मध्यस्थितजलमंदिरे भगवन्महावीर-चरणकमलयोः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौतम गणधर के चरण, पूजूँ मैं चितलाय।
केवलज्ञान हुआ वहीं, नमूँ मोह नश जाय।।२।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरस्य मध्यस्थितजलमंदिरे गौतमगणधरचरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य सुधर्मा स्वामि के, गणधर चरण महान।
उनको अर्घ्य चढ़ाय मैं, पाऊँ सम्यक् ज्ञान।।३।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसरोवरस्य मध्यस्थितजलमंदिरे श्रीसुधर्मास्वामि-गणधरचरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनमंदिर प्रांगण विषै, कई जिनालय जान।
उनमें स्थित बिम्ब सब, पूजूँ करूँ प्रणाम।।४।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसिद्धक्षेत्रस्यदिगम्बरजिनमंदिरपरिसरे निर्मित जिनालयेषु विराजित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभु छंद

जलमंदिर के सम्मुख इक पांडुकशिला नाम उद्यान कहा।
प्रभु महावीर की खड्गासन प्रतिमा, से वह जिनधाम रहा।।
गणिनी माता श्री ज्ञानमती ने, पुण्य कार्य यह कर डाला।
उन महावीर को अर्घ्य चढ़ा, मैं जपूँ वीर की ही माला।।५।।

ॐ ह्रीं पावापुरीसिद्धक्षेत्रे जलमंदिरसम्मुखे विराजमान तीर्थंकरमहावीर खड्गासन जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं पावापुरीनिर्वाणभूमिपवित्रीकृतायश्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

स्रग्विणी छंद

अर्चना मैं करूँ पावापुरि तीर्थ की, जो है निर्वाणभूमी महावीर की।
वन्दना मैं करूं पावापुरि तीर्थ की, जो है कैवल्यभूमी गणाधीश की।।टेक.।।
जैनशासन के चौबीसवें तीर्थंकर, जन्मे कुण्डलपुरी राजा सिद्धार्थ घर।
रानी त्रिशला ने सपनों का फल पा लिया, बोलो जय त्रिशलानंदन महावीर की।।१।।
वीर वैरागी बनकर युवावस्था में, दीक्षा ले चल दिये घोर तप करने को।
मध्य में चन्दना के भी बंधन कटे, बोलो कौशाम्बी में जय महावीर की।।२।।
प्रभु ने बारह बरस तक तपस्या किया, केवलज्ञान तब प्राप्त उनको हुआ।
राजगिरि विपुलाचल पर प्रथम दिव्यध्वनि, खिर गई बोलो जय जय महावीर की।।
तीस वर्षों में, प्रभु का भ्रमण जो हुआ, सब जगह समवसरणों की रचना हुई।
पावापुर के सरोवर से शिवपद लिया, बोलो जय पावापुर के महावीर की।।४।।

मास कार्तिक अमावस के प्रत्यूष में, कर्मों को नष्ट कर पहुँचे शिवलोक में।
तब से दीपावली पर्व है चल गया, बोलो सब मिल के जय जय महावीर की।।५।।
पावापुर के सरोवर में फूले कमल, आज भी गा रहे कीर्ति प्रभु की अमर।
वीर प्रभु के चरण की करो अर्चना, बोलो जय सिद्ध भगवन् महावीर की।।६।।
पंक में खिल के पंकज अलग जैसे हैं, मेरी आत्मा भी संसार में वैसे है।
उसको प्रभु सम बनाने का पुरुषार्थ कर, जय हो अंतिम जिनेश्वर महावीर की।।७।।
पूरे सरवर के बिच एक मंदिर बना, जो कहा जाता जल मंदिर है सोहना।
पारकर पुल से जाकर करो वंदना, बोलो जय पास जाकर महावीर की।।८।।
लोग प्रतिवर्ष दीपावली के ही दिन, पावापुर में मनाते हैं निर्वाणश्री।
भक्त निर्वाणलाडू चढ़ाते जहाँ, बोलो उस भूमि पर जय महावीर की।।९।।
वीर के शिष्य गौतम गणीश्वर ने भी, पाया कैवल्यपद वीर सिद्धि दिवस।
पूजा महावीर के संग करो उनकी भी, बोलो गौतम के गुरु जय महावीर की।।१०।।
पावापुर में नमूँ वीर के पदकमल, और गौतम, सुधर्मा के गणधर चरण।
''चन्दनामति'' चरणत्रय का अर्चन करो, बोलो त्रयरत्नपति प्रभु महावीर की।।११।।
थाल पूर्णार्घ्य का यह सजाया प्रभो, मैंने जयमाल में वह चढ़ाया प्रभो।
इससे आतमविशुद्धी बढ़े नित्य ही, भाव से बोलो जय प्रभु महावीर की।।१२।।
धाम सिद्धी स्वयंवर का है तीर्थ ये, जिसने प्रभु वीर से पाई यशकीर्ति है।।
यदि वरण करना है वैसी सिद्धी प्रिया, अर्चना कर लो पावापुरी तीर्थ की।।१३।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरनिर्वाणभूमिपावापुरीसिद्धक्षेत्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः

दोहा

सिद्धभूमि महावीर की, पूजा है सुखकार।
पावापुरिवर तीर्थ का, वन्दन बारम्बार।।

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः

❖❖❖❖❖❖

महावीर जिन पूजा

रचयित्री-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

(तर्ज-तुमसे लागी लगन.....)

आपके श्रीचरण, हम करें नित नमन, शरण दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।टेक.।।
वीर सन्मति महावीर भगवन् !
आवो आवो यहाँ नाथ! श्रीमन्!
आप पूजा करें, शुद्ध समकित धरें, शक्ति दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक

(तर्ज-चंदन सा वदन.....)

शंभु छंद

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
गंगानदि का शुचि जल लेकर, तुम चरण चढ़ाने आये हैं।
भव भव का कलिमल धोने को,श्रद्धा से अति हरषाये हैं।।
हे वीरप्रभो! महावीर प्रभो! त्रयधारा दें तव चरणों में।।त्रि.।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।

हरिचंदन कुंकुम गंध लिये, जिनचरण चढ़ाने आये हैं।
मोहारिताप संतप्त हृदय, प्रभु शीतल करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! चंदन लेकर, चर्चन करते तव चरणों में।।त्रि.।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
क्षीराम्बुधि फेन सदृश उज्जवल, अक्षत धोकर ले आये हैं।
क्षय विरहित अक्षय सुख हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! हम पुंज चढ़ा, अर्चन करते तव चरणों में।।त्रि.।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेंद्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं.....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
बेला चंपक अरविंद कुमुद, सुरभित पुष्पों को लाये हैं।
मदनारिजयी तव चरणों में, हम अर्पण करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! पुष्पों को ले, पूजा करते तव चरणों में।।त्रि.।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
पूरणपोली खाजा गूझा, मोदक आदिक बहु लाये हैं।
निज आतम अनुभव अमृत हित, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! चरु अर्पण कर, हम नमन करें तव चरणों में।।त्रि.।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।

मणिमय दीपक में ज्योति जले, सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही, सज्ज्ञानज्योति निज में भासे।।
हे वीरप्रभो! तुम आरति कर, हम नमन करें तव चरणों में।।त्रि.।।६।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहाधंकारविनाशनाय दीपं.....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
दशगंध विमिश्रित धूप सुरभि, धूपायन में खेते क्षण ही।
कटु कर्म दहन हो जाते हैं, मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।
हे वीर प्रभो! हम धूप जला, अर्चन करते तव चरणों में।।त्रि.।।७।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
एला केला अंगूरों के, गुच्छे अतिसरस मधुर लाये।
परमानंदामृत चखने हित, फल से पूजन कर हर्षाये।।
हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हम नमन करें तव चरणों में।।त्रि.।।८।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलिकर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाये हैं।
निजगुण अनंत की प्राप्ति हेतु, प्रभु अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
हे वीर प्रभो! हम अर्घ्य चढ़ा, कर नमन करें तव चरणों में।।त्रि.।।९।।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

उपेंद्रवज्रा छंद

त्रैलोक्य शांती कर शांतिधारा, श्री सन्मती के पदकंज धारा।
निजस्वांत शांतीहित शांतिधारा, करते मिले हैं भवदधि किनारा।।१०।।
शांतये शांतिधारा।

सुरकल्पतरु के वर पुष्प लाऊँ, पुष्पांजलि कर निज सौख्य पाऊँ।
संपूर्ण व्याधी भय को भगाऊँ, शोकादि हर के सब सिद्धि पाऊँ।।११।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

गीता छंद

सिद्धार्थ नृप कुण्डलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़शुक्ला छठ तिथि, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।१।।
ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं....।

सितचैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े।।२।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं...।

मगसिर वदी दशमी तिथि, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।३।।
ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां श्रीमहावीरजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं....।

प्रभु ने प्रथम आहार राजा, कूल के घर में लिया।
वैशाख सुदि दशमी तिथी, केवलरमा परिणय किया।।
श्रावण वदी एकम तिथि, गौतम मुनी गणधर बनें।
तव दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी, हम पूजते हर्षित तुम्हें।।४।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीमहावीरजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं.....।

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।
निर्वाण लक्ष्मी वरणकर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें।।५।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां श्रीमहावीरजिननिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं.....।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

दोहा

चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतित फलदातार।
तुम गुणमणिमाला कहूँ, सुखसंपतिसाकार।।१।।

(चाल-श्रीपति जिनवर करुणा.....)

जय जय श्री सन्मति रत्नाकर! महावीर! वीर! अतिवीर! प्रभो!
जय जय गुणसागर वर्धमान! जय त्रिशलानंदन! धीर प्रभो!।।
जय नाथवंश अवतंस नाथ! जय काश्यपगोत्र शिखामणि हो।
जय जय सिद्धार्थतनुज फिर भी, तुम त्रिभुवन के चूड़ामणि हो।।२।।
जिस वन में ध्यान धरा तुमने, उस वन की शोभा अति न्यारी।
सब ऋतु के फूल खिलें सुन्दर, सब फूल रहीं क्यारी क्यारी।।
जहँ शीतल मंद पवन चलती, जल भरे सरोवर लहरायें।।
सब जात विरोधी जन्तूगण, आपस में मिलकर हरषायें।।३।।
चहुँ ओर सुभिक्ष सुखद शांती, दुर्भिक्ष रोग का नाम नहीं।
सब ऋतु के फल फल रहे मधुर, सब जन मन हर्ष अपार सही।।

कंचन छवि देह दिपे सुंदर, दर्शन से तृप्ति नहीं होती।
सुरपति भी नेत्र हजार करे, निरखे पर तृप्ति नहीं होती।।४।।
श्री इन्द्रभूति आदिक ग्यारह, गणधर सातों ऋद्धीयुत थे।
चौदह हजार मुनि अवधिज्ञानी, आदिक सब सात भेदयुत थे।।
चंदना प्रमुख छत्तीस सहस, संयतिकायें सुरनरनुत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकाएं, त्रय लाख चतुःसंघ संख्या थी।।५।।
प्रभु सात हाथ, उत्तुंग आप, मृगपति लांछन से जग जाने।
आयू बाहत्तर वर्ष कही, तुम लोकालोक सकल जाने।।
भविजन खेती को धर्मामृत, वर्षा से सिंचित कर करके।
तुम मोक्षमार्ग अक्षुण किया, यति श्रावक धर्म बता करके।।६।।
मैं भी अब आप शरण आया, करुणाकर जी करुणा कीजे।
निज आत्म सुधारस पान करा, सम्यक्त्व निधी पूर्णा कीजे।।
रत्नत्रयनिधि की पूर्ती कर, अपने ही पास बुला लीजे।
''सज्ज्ञानमती'' निर्वाणश्री, साम्राज्य मुझे दिलवा दीजे।।७।।

घत्ता

जय जय श्रीसन्मति, मुक्ति रमापति, जय जिनगुणसंपति दाता।
तुम पद पूजूँ, भक्ति बढ़ाऊँ, पाऊँ निजगुण विख्याता।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

गीताछंद

महावीर की निर्वाण बेला, में भविक शुचि भाव से।
निर्वाण लक्ष्मीपति जिनेश्वर,पूजते अति चाव से।।
वे भव्य नर सुर के अतुल, संपत्ति सुख पाते घने।
फिर अन्त में शुचि ''ज्ञानमति'', निर्वाण लक्ष्मीपति बने।।१।।

।।इत्याशीर्वादः।।

गौतम गणधर पूजा

-गणिनी ज्ञानमती माताजी

गीता छंद

गणपति गणीश गणेश गणनायक गणीश्वर नाम हैं।
गणनाथ गणस्वामी गणाधिप आदि नाम प्रधान हैं।।
उन इंद्रभूति गणीन्द्र गौतम स्वामि गणधर को जजूँ।
स्थापना करके यहाँ सब कार्य में मंगल भजूँ।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक-नन्दीश्वर पूजन चाल

रेवानदि का शुचि नीर, बाहर मल धोवे।
तुम चंरणन धारा देत, अंतर्मल खोवे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।१।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

मलयज चंदन घनसार, तन का ताप हरे।
तुम पद पूजा तत्काल, अंतर्ताप हरे।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने संसारतापविनाशनाय चंदनं....।

तंदुल सित मुक्तारूप, धोकर भर लीने।
तुम पद आगे धर पुंज, आतम गुण चीन्हे।।

श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं.....।

चंपक वर हरसिंगार, सुरतरु सुमन लिया।
तुम कामजयी पद पूज, निजमन सुमन किया।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।४।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

लाडू बरफी पकवान, सुवरण थाल भरे।
निज क्षुधा निवारण हेतु, तुम पद पूज करें।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

कर्पूर शिखा प्रज्वाल, दीपक ज्योति जले।
तुम पद पूजत तत्काल, अंतर ज्योति जले।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।६।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं.....।

दशगंध सुगंधित धूप, खेवत धूम्र उड़े।
निज अशुभ करम हों भस्म, उसकी धूम्र उड़े।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

बादाम सुपारी सेव, उत्तम फल लाऊँ।
गणनाथ चरण युगपूज, वांछित फल पाऊँ।।

श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।८।।

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

जल गंधादिक वसु द्रव्य, लेकर अर्घ्य करूँ।
अनुपम निजपद के हेतु, तुम पद भक्ति करूँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

गुरू चरणन जल की धार, देकर शांति करूँ।
सब जग में शांती हेतु, शांतीधार करूँ।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।१०।।

शांतये शांतिधारा।

वकुलादिक कुसुम मंगाय, पुष्पांजलि कर मैं।
सब विघ्न अमंगल दोष, नाशूँ इक पल में।।
श्री गौतम गणधर देव, पूजूँ मन लाके।
सब ऋद्धि सिद्धि भरपूर, होवें तुम ध्याके।।११।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य-ॐ ह्रीं श्रीगौतमस्वामिने नमः (१०८ या ९ बार)।

जयमाला

दोहा

परमब्रह्म परमात्मा, परमानंद निलीन।
गाऊँ तुम गुणमालिका, होवे भवदुखक्षीण।।१।।

रोला छंद

जय जय गणधर देव, जय जय गुण गण स्वामी।
महावीर जिनदेव, समवसरण में नामी।।

जय जय विघ्न समूह, नाशक विश्व प्रसिद्धा।
सप्तऋद्धि परिपूर्ण, चार विज्ञान समृद्धा।।२।।
इन्द्रभूति तुम नाम, महाविभूति प्रदाता।
ब्राह्मण कुल अवतंस, गौतम गोत्र विख्याता।।
शास्त्र महोदधि तीर्ण, पांच शतक तुम छात्रा।
तुम सम ही दो भ्रात, गर्वित सहित सुछात्रा।।३।।
छ्यासठ दिन पर्यंत, प्रभु की खिरी न वाणी।
सौधर्मेंद्र उपाय, कीनो अति सुखठानी।।
गौतमशाला माहिं, वृद्धरूप धर आया।
तुम सब विद्याधीश, इससे तुम तक आया।।४।।
मेरे गुरु महावीर, आतम ध्यान लगाये।
भूल गया मैं अर्थ, जो जो श्लोक पढ़ाये।।
यदि दो अर्थ बताय, तो तुम शिष्य बनूँ मैं।
नहिं तो होवो शिष्य, मुझ गुरु के ये चहूँ मैं।।५।।
त्रैकाल्यं इत्यादि, जब यह श्लोक पढ़ा है।
अर्थ बोध से हीन, मन आश्चर्य बढ़ा है।।
चलो गुरू के पास, मैं शास्त्रार्थ करूँगा।
तुम हो छात्र अजान, गुरु से अर्थ कहूँगा।।६।।
उभय भ्रात के साथ, सब शिष्यों को लेके।
चले इंद्र के साथ, समवसरण अवलोके।।
मानस्तंभ निहार, मान गलित हुआ सारा।
वचन ''जयतु भगवान्'' स्तुति रूप उचारा।।७।।
निज मिथ्यात्व विनाश, जिनदीक्षा को लीना।
दिव्यध्वनि तत्काल, प्रगटी भवि सुख दीना।।
द्वादशांग मय ग्रंथ, गौतम गुरु ने कीने।
गणधर पद को पाय, सब ऋद्धी धर लीने।।८।।

वीर प्रभू निर्वाण, के दिन केवल पायो।
इन्द्र सभी मिल आय, गंधकुटी रचवायो।।
केवलज्ञान कल्याण, पूजा इन्द्र रचे हैं।
केवलज्ञान महान, लक्ष्मी को भी जजे हैं।।९।।
इसी हेतु सब लोग, दीपावली निशा में।
गणपति लक्ष्मी देवि, पूजें धनरुचि मन में।।
बारह वर्ष विहार, भवि उपदेश दिया है।
पुनः अघाति विनाश, मोक्ष प्रवेश किया है।।१०।।
गणधर पूजा सत्य, सर्वसपंदा देवें।
धन धान्यादि पूर, मोक्ष संपदा देवें।।
इस हेतू हम आज, गणधर चरण जजे हैं।
''केवलज्ञान'' प्रकाश, हेतू आप भजे हैं।।११।।

दोहा

चौबीसों जिनराज की, गणधर गणना जान।
चौदह सौ बावन कही, तिनपद जजूँ महान् ।।१२।।

ॐ ह्रीं श्रीगौतमगणधरपरमेष्ठिने जयमाला अर्घ्यं....।

दोहा

जो पूजें गणधर चरण, करें विघ्नघन हान।
जग के सब सुख भोग के, क्रम से लें निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः।

❖❖❖❖❖❖

निर्वाणकाण्ड (भाषा)

दोहा

वीतराग वंदौ सदा, भावसहित सिरनाय।
कहूँ काण्ड निर्वाणकी, भाषा सुगम बनाय।।१।।

चौपाई

अष्टापद आदीश्वर स्वामि, वासुपूज्य चंपापुरि नामि।
नेमिनाथ स्वामी गिरनार, वंदौं भाव-भगति उर धार।।२।।
चरम तीर्थंकर चरम-शरीर, पावापुरि स्वामी महावीर।
शिखरसम्मेद जिनेसुर बीस, भावसहित वंदौं निश-दीस।।३।।
वरदत्तराय रु इंद्र मुनिंद्र, सायरदत्त आदि गुणवृंद।
नगर तारवर मुनि उठकोड़ि, वंदौं भावसहित कर जोड़ि।।४।।
श्रीगिरनार शिखर विख्यात, कोड़ि बहत्तर अरु सौ सात।
संबु-प्रद्युम्न कुमर द्वै भाय, अनिरुद्ध आदि नमूँ तसु पाय।।५।।
रामचंद्र के सुत द्वै वीर, लाड-नरिंद आदि गुणधीर।
पाँच कोडि मुनि-मुक्ति मंझार, पावागिरि वंदौ निरधार।।६।।
पांडव तीन द्रविड-राजान, आठ कोड़ि मुनि मुकति पयान।
श्रीशत्रुंजय-गिरि के सीस, भावसहित वंदौं निश-दीस।।७।।
जे बलभद्र मुकति में गये, आठ कोड़ि मुनि औरहु भये।
श्रीगजपंथ शिखर सुविशाल, जिनके चरण नमूँ तिहुँ काल।।८।।
राम हनू सुग्रीव सुडील, गव गवाख्य नील महानील।
कोड़ि निन्याणवै मुक्ति पयान, तुंगीगिरि वंदौं धरि ध्यान।।९।।
नंग अनंग कुमार सुजान, पाँच कोड़ि अरु अर्ध प्रमान।
मुक्ति गये सोनागिरि-शीश, ते वंदौं त्रिभुवनपति ईस।।१०।।

रावण के सुत आदिकुमार, मुक्ति गये रेवा-तट सार।
कोटि पंच अरु लाख पचास, ते वंदौं धरि परम हुलास।।११।।

रेवानदी सिद्धवर कूट, पश्चिम दिशा देह जहं छूट।
द्वै चक्री दश कामकुमार, ऊठकोड़ि वंदौं भव पार।।१२।।

बड़वानी बड़नयर सुचंग, दक्षिण दिशि गिरि चूल उतंग।
इंद्रजीत अरु कुंभ जु कर्ण, ते वंदौं भव-सायर तर्ण।।१३।।

सुवरण भद्र आदि मुनि चार, पावागिरि-वर-शिखर मंझार।
चेलना नदी तीर के, मुक्ति गये वंदौं नित तास।।१४।।

फलहोड़ी बड़गाम अनूप, पच्छिम दिशा द्रोणगिरि रूप।
गुरुदत्तादि-मुनीसुर जहाँ, मुक्ति गये वंदौं नित तहाँ।।१५।।

बाल महाबाल मुनि दोय, नागकुमार मिले त्रय होय।
श्रीअष्टापद मुक्ति मंझार, ते वंदौं नित सुरत संभार।।१६।।

अचलापुर की दिश ईसान, जहाँ मेंढगिरि नाम प्रधान।
साढ़े तीन कोड़ि मुनिराय, तिनके चरण नमूँ चित लाय।।१७।।

वंसस्थल वनके ढिग होय, पच्छिम दिशा कुंथुगिरि सोय।
कुलभूषण देशभूषण नाम, तिनके चरणनि करूँ प्रणाम।।१८।।

जसरथ राजा के सुत कहे, देश कलिंग पाँच सौ लहे।
कोटिशिला मुनि कोटि प्रमान, वंदन करूँ जोड़ जुग पान।।१९।।

समवसरण श्रीपार्श्व-जिनंद, रेसिंदीगिरि नयनानंद।
वरदत्तादि पंच ऋषिराज, ते वंदौं नित धरम-जिहाज।।२०।।

तीन लोकके तीरथ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजै तहाँ।
मन-वच-काय सहित सिरनाय, वंदन करहिं भविक गुणगाय।।२१।।

संवत सतरहसौ इकताल, आश्विन सुदि दशमी सुविशाल।
'भैया' वंदन करहिं त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल।।२२।।

❖❖❖❖❖❖

निर्वाणकाण्ड भाषा

पद्यानुवाद-गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

चाल-हे दीन बंधु.....

वृषभेष गिरिकैलाश से निर्वाण पधारे।
चंपापुरी से वासुपूज्य मुक्ति सिधारे।।
नेमीश ऊर्जयंत से निर्वाण गये हैं।
पावापुरी से वीर परमधाम गये हैं।।१।।

इंद्रादिवंद्य बीस जिनेश्वर करम हने।
सम्मेद गिरि शिखर से शिवगये नमूँ उन्हें।।
इन चार बीस जिन की सदा वंदना करूँ।
निर्वाण सौख्य प्राप्ति हेतु अर्चना करूँ।।२।।

बलभद्र सात और आठकोटि बताए।
यादवनरेन्द्र आर्ष में हैं साधु कहाये।।
गजपंथगिरिशिखर से ये निर्वाण गये हैं।
इनको नमूँ ये मुक्ति में निमित्त कहे हैं।।३।।

वरदत्त औ वरांग सागरदत्त मुनिवरा।
ऋषि और साढ़े तीन कोटि भव्य सुखकरा।।
ये तारवरनगर से मुक्तिधाम पधारे।
मैं नित्य नमूँ मुझको भी संसार से तारें।।४।।

श्री नेमिनाथ औ प्रद्युम्न शंभु कुमारा।
अनिरुद्धकुमर पा लिया भवदधिका किनारा।।
मुनिराज बाहत्तर करोड़ सात सौ कहे।
ये ऊर्जयंत गिरि से सभी मुक्ति को लहें।।५।।

दो पुत्र रामचंद्र के औ लाडनृपादी।
ये पाँचकोटि साधुवृंद निजरसास्वादी।।
ये पावागिरीवर शिखर से मोक्ष गये हैं।
भविवृंद के निर्वाण में ये हेतु कहे हैं।।६।।

जो पांडुपुत्र तीन और द्रविडनृपादी।
ये आठ कोटि साधु परम समरसास्वादी।।
शत्रुंजयाद्रि शिखर से ये सिद्ध हुए हैं।
इनको नमूँ ये सिद्धि में निमित्त हुए हैं।।७।।

श्रीराम हनूमान औ सुग्रीव मुनिवरा।
जो गव गवाख्य नील महानील सुखकरा।।
निन्यानवे करोड़ तुंगीगिरि से शिव गये।
उन सब की वंदना से सर्व पाप धुल गये।।८।।

जो अंग नौ अनंग दो कुमार हैं कहे।
वे साढ़े पाँच कोटि मुनि सहित शिव गये।।
सोनागिरी शिखर है सिद्धक्षेत्र इन्हों का।
इनको नमूँ इन भक्ति भवसमुद्र में नौका।।९।।

दशमुखनृपति के पुत्र आत्म तत्त्व के ध्याता।
जो साढ़े पाँच कोटि मुनि सहित विख्याता।।
रेवा नदी के तीर से निर्वाण पधारे।
मैं नित्य नमूँ मुझको भवोदधिसे उबारें।।१०।।

चक्रीश दो दश कामदेव साधुपद धरा।
मुनि साढ़े तीन कोटि मुक्तिराज्य को वरा।।
रेवा नदी के तीर अपरभाग में सही।
मैं सिद्धवरसुकूट को वंदूँ जो शिवमही।।११।।

बड़वानि वरनगर में दक्षिणी सुभाग में।
है चूलगिरि शिखर जो सिद्धक्षेत्र नाम में।।
श्री इन्द्रजीत कुंभकरण मोक्ष पधारे।
मैं नित्य नमूँ उनको सकल कर्म विडारें।।१२।।

पावागिरी नगर में चेलनानदी तटे।
मुनिवर सुवर्णभद्र आदि चार शिव बसे।।
निर्वाण भूमि कर्म का निर्वाण करेगी।
मैं नित्य नमूँ मुझको परम धाम करेगी।।१३।।

फलहोड़ी श्रेष्ठ ग्राम में पश्चिम दिशा कही।
श्री द्रोणगिरि शिखर है परमपूत भू सही।।
गुरुदत्त आदि मुनिवरेन्द्र मृत्यु के जयी।
निर्वाण गये नित्य नमूँ पाऊँ शिव मही।।१४।।

श्री बालि महाबालि नागकुमर आदि जो।
अष्टापदाद्रि शिखर से निर्वाण प्राप्त जो।।
उनको नमूँ वे कर्म अद्रि चूर्ण कर चुके।
वे तो अनंत गुण समूह पूर्ण कर चुके।।१५।।

अचलापुरी ईशान में मेढ़ागिरी कही।
मुनिराज साढ़े तीन कोटि उनकी शिव मही।।
मुक्तागिरी निर्वाण भूमि नित्य नमूँ मैं।
निर्वाण प्राप्ति हेतु अखिल दोष वमूँ मैं।।१६।।

वंशस्थली नगर के अपरभाग में कहा।
कुंथलगिरी शिखर जगत में पूज्य हो रहा।।
श्री कुलभूषण औ देशभूषण मुक्ति गये हैं।
मैं नित्य नमूँ उनको वे कृतकृत्य हुए हैं।।१७।।

जसरथनृपति के पुत्र और पाँच सौ मुनी।
निर्वाण गए हैं कलिंग देश से सुनी।।
मुनिराज एक कोटि कोटिशिला से कहे।
निर्वाण गए उनको नमूँ दुःख ना रहे।।१८।।

श्री पार्श्व के समवसरण में जो प्रधान थे।
वरदत्त आदि पाँच ऋषी गुण निधान थे।।
रेसिंदिगिरि शिखर से वे निर्वाण पधारे।
मैं उनको नमूँ वे सभी संकट को निवारें।।१९।।

जिस जिस पवित्र थान से जो जो महामुनी।
निर्वाण परम धाम गये हैं अतुलगुणी।।
मैं उन सभी की नित्य भक्ति वंदना करूँ।
त्रिकरण विशुद्ध कर नमूँ शिवांगना वरूँ।।२०।।

मुनिराज शेष जो असंख्य विश्व में कहे।
जिस जिस पवित्र थान से निर्वाण को लहें।।
उन साधुओं की, क्षेत्र की भी वंदना करूँ।
संपूर्ण दुःख क्षय निमित्त प्रार्थना करूँ।।२१।।

श्री पार्श्वनागद्रह में कहे उनको मैं नमूँ।
श्री मंगलापुरी में अभिनंदनं नमूँ।।
पट्टण सुआशारम्य में मुनिसुव्रतेश को।
है बार-बार वंदना इन श्री जिनेश को।।२२।।

पोदनपुरी में बाहुबली देव को नमूँ।
श्री हस्तिनापुरी में शांति, कुंथु, अर नमूँ।।
वाराणसी में श्री सुपार्श्व पार्श्व जिन हुए।
उनकी करूँ मैं वंदना वे सौख्यकर हुए।।२३।।

मथुरा में श्री वीर को नाऊँ सुभाल मैं।
अहिछत्र में श्री पार्श्व को वंदूँ त्रिकाल मैं।।
जंबूमुनीन्द्र जंबूविपिनगहन में आके।
निर्वाण प्राप्त हुए नमूँ शीश झुकाके।।२४।।

जो पंचकल्याणक पवित्र भूमि कही है।
इस मध्यलोक में महान तीर्थ सही है।।
मनवचसुकायशुद्धि सहित शीश नमाके।
मैं नित्य नमस्कार करूँ हर्ष बढ़ाके।।२५।।

श्री वरनगर में पूज्य अर्गलदेव को वंदूँ।
उनके निकट श्री कुंडली जिनेश को वंदूँ।।
शिरपुर में पार्श्वनाथ को मैं भाव से नमूँ।
लोहागिरी के शंखदेव नेमि को नमूँ।।२६।।

जो पाँच सौ पचीस धनुष तुंग तनु धरे।
केशर कुसुम की वृष्टि जिनपे देवगण करें।।
उन गोमटेश देव की मैं वंदना करूँ।
निज आत्म सौख्य प्राप्ति हेतु अर्चना करूँ।।२७।।

निर्वाणथान मध्यलोक में भी जो कहे।
अतिशय भरे अतिशय स्थान जगप्रथित रहें।।
इन सिद्धक्षेत्र सर्व को ही शीश झुकाके।
मैं बार बार नमन करूँ ध्यान लगाके।।२८।।

जो भव्य जीव भावशुद्धि सहित नित्य ही।
निर्वाणकाण्ड को पढ़ें त्रिकाल में सही।।
चक्रीश इन्द्रपद के वे सुखानुभव करें।
पश्चात् परमानन्दमय निर्वाणपद वरें।।२९।।

अंचलिका-कुसुमलताछंद

भगवन् ! परिनिर्वाण भक्ति का, कायोत्सर्ग किया उसके।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाहूँ मैं रुचि से।।
इस अवसर्पिणी में चतुर्थ शुभ, काल उसी के अंतिम में।
तीन वर्ष अरू आठ मास इक, पक्ष शेष था जब उसमें।।१।।

पावानगरी में कार्तिक शुभ, मास कृष्ण चौदश तिथि में।
रात्रिअंत नक्षत्र स्वाति सह, उषाकाल की बेला में।।
वर्धमान भगवान् महति महावीर सिद्धि को प्राप्त हुए।
तीनलोक के भावन व्यंतर, ज्योतिष कल्पवासिगण ये।।२।।

निज परिवार सहित चउविध सुर, दिव्य गंध दिव पुष्पों से।
दिव्यधूप दिव चूर्णवास औ, दिव्य स्नपन विधी करते।।
अर्चें पूजें वंदन करते, नमस्कार भी नित करते।
परिनिर्वाण महा कल्याणक, पूजा विधि रुचि से करते।।३।।

मैं भी यहीं मोक्ष कल्याणक, की नित ही अर्चना करूँ।
पूजन वंदन करूँ भक्ति से, नमस्कार भी पुनः करूँ।।
दुःखों का क्षय कर्मों का क्षय, हो मम बोधि लाभ होवे।
सुगतिगमन हो समाधिमरणं, मम जिनगुणसंपत्ति होवे।।४।।

❖❖❖❖❖❖

भगवान महावीर चालीसा

लेखिका-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

सिद्धिप्रिया के नाथ हैं, महावीर भगवान।
सिद्धारथ सुत वीर को, मेरा कोटि प्रणाम।।१।।

वर्धमान अतिवीर प्रभु, सन्मति हैं सुखकार।
पाँच नाम युत वीर को, वन्दन बारम्बार।।२।।

चालीसा महावीर का, पढ़ो भव्य मन लाय।
रोग शोक संकट टलें, सुख सम्पति मिल जाय।।३।।

चौपाई

जय जय श्री महावीर हितंकर। जय हो चौबिसवे तीर्थंकर।।१।।
जय प्रभु तुम जग में क्षेमंकर। जय जय नाथ तुम्हीं शिवशंकर ।।२।।
जन्म लिया प्रभु कुण्डलपुर में। चैत्र सुदी तेरस शुभ तिथि में।।३।।
त्रिशला माता धन्य हो गईं। अपने सुत में मग्न हो गईं।।४।।
राजा सिद्धारथ हरषाये। पुत्र जन्म पर दान बंटाये।।५।।
स्वर्गों में भी खुशियाँ छाईं। इन्द्रों की टोली वहाँ आई।।६।।
नंद्यावर्त महल में जाकर। सिद्धारथ से आज्ञा पाकर।।७।।
पहुँची शची प्रसूती गृह में। माता की त्रय प्रदक्षिणा दे।।८।।
त्रिशला माँ का वन्दन करके। उनको निद्रा सम्मुख करके।।९।।
मायामय बालक को सुलाया। गोद में जिनबालक को उठाया।।१०।।
तत्क्षण स्त्रीलिंग विनाशा। शिवपद की मन में अभिलाषा।।११।।
जिन शिशु को बाहर लाकर के। दिया इन्द्र के करकमलों में।।१२।।

इन्द्र प्रभू को ले अति हरषा। हर्षाश्रु की हो गई वर्षा।।१३।।
दो नेत्रों से देख न पाया। नेत्र सहस तब उसने बनाया।।१४।।
निरखा अंग अंग जिनवर का। फिर भी उसका मन नहिं भरता।।१५।।
मेरू सुदर्शन पर ले जाकर। किया जन्म अभिषेक प्रभू पर।।१६।।
उस जन्मोत्सव का क्या कहना। तीन लोक में उसकी महिमा।।१७।।
इन्द्र ने नामकरण किया प्रभु का। वीर व वर्धमान पद उनका।।१८।।
जन्म न्हवन के बाद शची ने। प्रभु को किया सुसज्जित उसने।।१९।।
फिर कुण्डलपुर नगरी आकर। मात पिता को सौंपा बालक।।२०।।
वहाँ पुनः जन्मोत्सव करके। नृत्य किया था कुण्डलपुर में।।२१।।
पलना खूब झुलाया प्रभु का। नंद्यावर्त महल परिसर था।।२२।।
एक बार दो मुनिवर आये। जिनशिशु को लख अति हर्षाये।।२३।।
दूर हुई उनकी मनशंका। ''सन्मति'' नाम उन्होंने रक्खा।।२४।।
बालपने में क्रीड़ा करते। मात पिता के मन को हरते।।२५।।
संगमदेव एक दिन आया। उसने सर्प का वेष बनाया।।२६।।
वर्धमान तब खेल रहे थे। देवबालकों के संग वन में।।२७।।
उनके बल की हुई परीक्षा। सर्प देव की थी यह इच्छा।।२८।।
चढ़े सर्प के फण पर वे तो। मानो माँ की गोदी में हों।।२९।।
सर्प ने देवरूप प्रगटाया। महावीर कह शीश झुकाया।।३०।।
बालपने से यौवन पाया। लेकिन ब्याह नहीं रचवाया।।३१।।
जातिस्मरण हुआ जब उनको। दीक्षा लेने चल दिये वन को।।३२।।
बारह वर्ष कठिन तप करके। केवलज्ञान प्रगट हुआ उनके।।३३।।
प्रथम देशना विपुलाचल पर। प्रगटी शिष्य मिले जब गणधर।।३४।।
बीस वर्ष तक समवसरण में। दिव्य देशना दी जिनवर ने।।३५।।

पावापुर से मोक्ष पधारे। तीर्थंकर महावीर हमारे।।३६।।
सबने दीपावली मनाई। तब से ही दीवाली आई।।३७।।
चला वीर संवत्सर जग में। सर्वाधिक प्राचीन सुखद है।।३८।।
कार्तिक शुक्ला एकम तिथि से। प्रारंभ होता नया वर्ष है।।३९।।
महावीर की जय सब बोलो। आत्मा के सब कल्मष धो लो।।४०।।

शंभु छन्द

प्रभु महावीर का चालीसा, जो चालिस दिन तक पढ़ते हैं।
उनकी स्मृति में दीवाली के, दिन दीपोत्सव करते हैं।।
विघ्नों का शीघ्र विलय होकर, उनको मनवाञ्छित फल मिलता।
लौकिक वैभव के साथ साथ, आध्यात्मिक सौख्यकमल खिलता।।१।।

पच्चिस सौ उनतिस वीर संवत्, शुभ ज्येष्ठ कृष्ण मावस तिथि में।
रच दिया ज्ञानमति गणिनी की, शिष्या ''चन्दनामती'' मैंने।।
पावापुर में जलमंदिर का, दर्शन कर मन अति हर्षित है।
प्रभु महावीर के चरणों में, मेरी यह कृती समर्पित है।।२।।

रत्नत्रय की हो वृद्धि प्रभो, बोधी समाधी की प्राप्ती हो।
नश्वर इस मानव तन द्वारा, अविनश्वर पद की प्राप्ती हो।।
उससे पहले प्रभु आर्त रौद्र, ध्यानों की सहज समाप्ती हो।
मैं धर्मध्यान में रम जाऊँ, तब ही सच्ची सुख शांती हो।।३।।

❖❖❖❖❖❖

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज-कभी तू.....

मुझे पावापुर जाना है, मुझे जलमन्दिर जाना है,
वहाँ लाडू चढ़ाकर दीवाली का पर्व मनाना है।
जय जय दीवाली हो.....जय जय दिवाली .....।टेक०।।

महावीर प्रभु कर्म नाशकर, मोक्षधाम जब पहुंचे।
पावापुर के जलमंदिर में, देव इन्द्र सब पहुंचे-देव इन्द्र सब पहुंचे।
उनकी ही यादों में, अब दीप जलाना है।
घर घर में धन लक्ष्मी का, भण्डार भराना है।। मुझे०।।१।।

वह पावापुरी सरोवर, अब तक भी लहर रहा है।
प्राचीन वहाँ जलमंदिर, का उपवन महक रहा है, हाँ उपवन महक रहा है।
आती है याद वहाँ, महावीर प्रभू जी की।
जिनको वन्दन करती, है भारत की धरती।। मुझे०।।२।।

महावीर वीरसंवत्सर, मंगलमय हो सब जग में।
निर्वाण की ही स्मृति में, जो शुरू हुआ भारत से.....जो शुरू....
''चन्दनामती'' सबको, दीवाली मंगल हो।
जीवन में हरक्षण सबके, नव खुशियाँ शामिल हों।। मुझे०।।३।।

❖❖❖❖❖❖

BHAJAN

Written by-Pragyashramni
Aryika Chandnamati

MUSIC- Kabhi Too.....

I will go to Pavapur, there is Temple Jalmandir
After offering Ladu I will celebrate Diwali,
Be Happy Diwali, Be Happy Diwali.....
Tirthankar Mahavir attained, Liberation from there.
Saudharm Indra and Devas, came there from heaven came.....
Men Women were praying, all being were praying,
Give me Knowledge Vira,
Give me Knowledge Vira.....
I will go...(1)
The largest lamp series, burnt Saudharma Indra then,
That day Kartik Mavas is, called Diwali from then.....called.....
So Jaina tradition, this Diwali function,
Celebrate Diwali in memory Mahavira....
I will go to pavapur.....(2)
Nation is bowing his head, to Tirthankar Vira.
And remembering his teaching, Non-Violence of Vira...Non.....
Be happiness in world, be peaceful Universe,
"Chandnamati" all of world, accept Lord Vira....
I will go pavapur.....(3)
I will go to pavapur, there is temple Jalmandir,
After offering Ladu I will celebrate Diwali....
Be Happy Diwali, Be Happy Diwali.....Diwali

❖❖❖❖❖❖

आरती श्री महावीर स्वामी की

तर्ज - तन डोले.....

जय वीर प्रभो, महावीर प्रभो की, मंगल दीप प्रजाल के,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।टेक.।।

सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभू जी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महिने तक कुबेर ने, बहुत रतन बरसाए ।। प्रभूजी.।।
कुण्डलपुर की, जनता हरषी, प्रभु गर्भागम कल्याण पे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।१।।

धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहाँ प्रभु लीना ।
चैत्र सुदी तेरस के दिन वहाँ, इन्द्र महोत्सव कीना ।। प्रभू जी.।।
थे नाथवंश के, भूषण तुम, बस एकमात्र अवतार थे।
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।२।।

यौवन में दीक्षा धारण कर, राज-पाट सब त्यागा ।
मगशिर असित मनोहर दशमी, मोह अंधेरा भागा ।। प्रभू जी. ।।
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिये मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।३।।

शुक्ल दशमि वैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था ।। प्रभू जी.।।
तब दिव्यध्वनि, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।४।।

पावापुरि सरवर में तुमने, योग निरोध किया था।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था ।। प्रभू जी.।।
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।५।।

वर्द्धमान, सन्मति, अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो।
कहे 'चन्दनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योति भर दो ।। प्रभू जी.।।
अतिशयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूँ आरतिया ।।६।।

❖❖❖❖❖❖

आरती श्री महावीर स्वामी की

ॐ जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो।।
ॐ जय महावीर प्रभो।।

सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी, स्वामी वैभव था भारी।
बाल ब्रह्मचारी व्रत, पाल्यौ तपधारी।। १।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

आतम ज्ञान विरागी, सम दृष्टि धारी।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी।। २।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

जग में पाठ अहिंसा, आपहि विस्तार्यो।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचार्यो।। ३।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

इह विधि चाँदनपुर में, अतिशय दरशायो।
ग्वाल मनोरथ पूर्‌यो, दूध गाय पायो।। ४।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

प्राणदान मंत्री को, तुमने प्रभु दीना।
मन्दिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना।। ५।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी।
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी।। ६।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर आवै।
होय मनोरथ पूरण, संकट मिट जावै।। ७।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

निशि दिन प्रभु मंदिर में, जगमग ज्योति जरै।
'हरि प्रसाद' चरणों में, आनन्द मोद भरै।। ८।।
ॐ जय महावीर प्रभो।

❖❖❖❖❖❖